◈ **श्री रामगोपाल विजयवर्गीय (1905-2003):**
जन्म- बालेर (सवाईमाधोपुर)। परम्परावादी चित्रकार व साहित्यकार। 1970 में 'कलाविद्' व 1984 में **पद्मश्री** से सम्मानित। **कलागुरु**- शैलेन्द्रनाथ डे; इनके चित्रण का सर्वाधिक प्रिय विषय नारी चित्रण है। '**अभिसार निशा**' उनकी प्रमुख साहित्यिक रचना है। उन्होंने 'मेघदूत', 'गीतगोविंद' पर चित्रण किया। उमर खैय्याम की रूबाइयों पर आधारित उनका चित्र 'संसार से विरक्ति' महत्त्वपूर्ण है। उन्हें 1988 ई. में केन्द्रीय ललित कला अकादमी द्वारा रत्न सदस्यता व 1990 ई. में आई फैक्स, दिल्ली द्वारा 'कला रत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया। वे राजस्थान ललित कला अकादमी के अध्यक्ष भी रहे।

◈ **श्री भूरसिंह शेखावत:** 1914 में बीकानेर के धोंधलिया ग्राम में जन्मे चित्रकार। ये राजस्थान के ऐसे चित्रकार थे जिन्होंने दिल्ली की आईफैक्स कला दीर्घा में अपनी एकल प्रदर्शनी 1948 में आयोजित की। श्री शेखावत के चित्रों को देखकर पं. नेहरू भी बहुत प्रभवित हुए थे। इन्होंने राजस्थानी जनजीवन का सच्चा व यथार्थवादी चित्रण किया। इन्होंने अनेक राष्ट्रभक्त नेताओं, देशभक्त शहीदों तथा क्रांतिकारी लौहपुरुषों का चित्रण किया।

◈ **स्व. श्री गोवर्धन लाल 'बाबा' (1914-1998):**
जन्म-कांकरोली (राजसमंद) में 1914 में। 'भीलों के चितेरे' के रूप में प्रसिद्ध। इन्होंने राजस्थान की लोक संस्कृति एवं विशेषत: मेवाड़ी भील जनजाति की जीवन शैली को अपनी तूलिका से जीवन्त किया। **प्रमुख चित्र 'बारात'**। भील जनजाति के दैनिक क्रिया-कलापों पर इन्होंने 1947 में आइफैक्स कला दीर्घा, नई दिल्ली में एकल प्रदर्शनी कर भारतीय चित्रकारों में ख्याति अर्जित करते हुए विद्या भवन, उदयपुर को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। गणगौर की सवारी, जौहर ज्वाला, पन्नाधाय, राणाप्रताप, बुद्ध निर्वाण व गवरी उनके अन्य प्रसिद्ध चित्र हैं। 1972-73 में उन्हें राजस्थान ललित कला अकादमी भी द्वारा 'कलाविद्' सम्मान से सम्मानित किया गया। '**राजस्थान के तीन मंदिर**' इनकी प्रमुख सचित्र पुस्तक है।

◈ **श्री कृपाल सिंह शेखावत (1922-2008 ई.):**

जन्म: मऊ (सीकर)। **कलागुरु**- नंदलाल बोस। भारतीय पारम्परिक कला के युगपुरुष व ब्लू पॉटरी के पर्याय। जहाँ परम्परागत पॉटरी में केवल नीला और हरा रंग का ही प्रयोग होता था वहाँ इन्होंने ब्लू पॉटरी में 25 रंगों का प्रयोग किया है। इन्होंने '**कृपाल शैली**' का ईजाद किया जो कि मुगल, राजपूत कला, बंगाल स्कूल और जापानी कला के समन्वय से विकसित हुई है। इनके प्रमुख चित्रण के विषय राधाकृष्ण, प्रेम-प्रसंग, गीतगोविंद तथा राजस्थान के लोक और इतिहास पुरुषों की जीवन घटनाएँ आदि है। वासक सज्जा नायिका, डेफोडिल्स, रामदेव जी, भरत कैरिंग रामाज सैंडिल्स आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। 1979-1980 में 'कलाविद्' सम्मान व 1974 में **पद्मश्री** से सम्मानित किया गया।

◈ **श्री देवकीनन्दन शर्मा (1917-2005 ई.)**

जन्म: अलवर में 1917 में। **कलागुरु**-शैलेन्द्रनाथ डे। पशुपक्षी चित्रण व भित्ति चित्रण में पर्याप्त ख्याति। 1980-81 ई. में कलाविद् सम्मान। 'Master of Nature and Living objects' के नाम से प्रसिद्ध।

◈ **परमानन्द चोयल (1924-2012 ई.)**

जन्म: कोटा में 1924 में। आधुनिक प्रयोगवादी चित्रकार व 'भैंसों के चितेरे' के रूप में विख्यात। 'परसैप्शन ऑफ उदयपुर' व 'योद्धा' इनकी प्रमुख

कृतियाँ हैं। ये तूलिका कलाकार परिषद के संस्थापक रहे। इनके द्वारा बनाए गए चित्र **'चित्रकार और शारदा'** से इन्हें काफी ख्याति मिली। चोयल के चित्रों पर फ्रांसिसी कलाकार 'वान गॉग' का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। लंदन की शाम, अराउन्ड हाउस, वुमैन इनके अन्य प्रसिद्ध चित्र हैं। इन्हें 1981-82 में 'कलाविद्' सम्मान से सम्मानित किया गया।

- **कुमार संग्राम सिंह:**

कुमार संग्रामसिंह राजस्थान की पारम्परिक चित्रकला की बारीकियों से पूर्ण परिचित थे। वे लेखक, समीक्षक व चित्रकार थे। राजस्थान के आरम्भिक काल में कला समालोचना की ज्योति जलाने वालों में उनका नाम प्रमुखता से गिनाया जा सकता है।

- **जयसिंह नीरज:**

11 फरवरी, 1929 को ग्राम तोलावास (अलवर, राजस्थान) में जन्में जयसिंह नीरज मूल रूप से कवि थे, किन्तु सन् 1971 में जब इन्होंने 'राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्णकाव्य' विषयक शोधकार्य किया तो उनकी रूचि कला लेखन में जागी। **'स्प्लेन्डर ऑफ राजस्थानी पेंटिंग'** पुस्तक इनके लेखों का संग्रह है। **'ढाणी का आदमी'**, **'राजस्थानी चित्रकला'** व **'कला का सृजनात्मक संसार'** इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं।

- **प्रेमचंद गोस्वामी (1936-2012):**

28 जुलाई, 1936 को बीकानेर में जन्मे प्रसिद्ध चित्रकार व लेखक प्रेमचंद्र गोस्वामी 1986-87 में राजस्थान ललित कला अकादमी का सर्वोच्च कला सम्मान प्राप्त एक सुधी साहित्यकार भी है जिन्हें साहित्य एवं कला लेखन पर राज्य सरकार, साहित्य अकादमी और हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। **'भारतीय चित्रकला का इतिहास'** तथा **'आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ'**, **'भारतीय कला के विविध रूप'** नामक उनकी पुस्तकें विशेष लोकप्रिय है। राजस्थान में पंच पद्धति के सिद्धहस्त प्रयोगधर्मी चित्रकार, रंगों और रेखाओं के जादूगर, कला समीक्षाकार, साहित्यकार, बालमन के धनी, सहज़-सरल स्वभाव वाले कलाविद् चित्रकार गोस्वामी प्रयोगशील चित्रकार थे। रंगोत्सव, रंगयात्रा, आकाश गंगा तथा मेरा गाँव, संघर्ष की ओर, परिवार, अंतर्मन का द्वन्द्व और यात्रा का पड़ाव उनकी कुछ प्रमुख कृतियाँ हैं।

- **आर.बी. गौतम:**
  चित्रकार व लेखक जिन्होंने '**कला का मनोविज्ञान**' नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी है। गौतम पत्रकारिता से भी जुड़े हैं। गौतम का माध्यम तैलरंग हैं जिनके लिए कृतियों में 'विषय' महत्त्वपूर्ण हैं। वर्ष 1995-96 में गौतम को राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य के सर्वोच्च कला सम्मान 'कलाविद्' से सम्मानित किया गया।
- **एम.के. शर्मा सुमहेन्द्र (1943-2012 ई.):**
  चित्रकला की पारम्परिक शैलियों में विशेष रूप से काम करने वाले सुमहेन्द्र एक सुघड़ मूर्तिकार भी थे। वे कलावृत्त संगठन के संस्थापक थे। उन्होंने '**कलावृत्त**' नामक कला पत्रिका का सफल सम्पादन किया। इनके चित्र भारतीय लघु चित्रण से प्रभावित रहे। उन्होंने किशनगढ़ शैली की नारी आकृतियों को लेकर चित्र में थोड़ा व्यंग्य का पुट देकर प्रशंसनीय संयोजन बनाया। 19 जुलाई, 2012 को 'सुमहेन्द्र' का निधन हो गया। सुमहेन्द्र नायन गाँव, जयपुर के थे।

◈ **कुंदनलाल मिस्त्री (1860-1926):**

उदयपुर के शिल्पी अमृतलाल मिस्त्री के पुत्र जिन्होंने देश-विदेश में अपनी कला साधना से नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व किया। **इन्हें राजस्थान में आधुनिक चित्रकला को प्रारंभ करने का श्रेय दिया जाता है। इन्हें 'वेलिंगटन पुरस्कार'** से सम्मानित किया गया था। कला में व्यक्तिवादी विचारधारा के संघर्ष चित्रकार कुंदनलाल की कलाकृतियों में दिखाई देते हैं। उन्हें राजा रवि वर्मा की भाँति स्थानीय शासकों के चित्र बनवाने के ध्येय से महाराणा फतेहसिंह मेवाड़ द्वारा बम्बई व लंदन में उच्च कला शिक्षा दिलवाई गई, पर वे पाश्चात्य चित्रकार कौरबे के **'स्टोन ब्रोकर्स'** की भाँति उच्चवर्गीय शासकों के चित्र न बनाकर निम्नवर्गीय जनजीवन एवं राजप्रासादों में राज्य चित्रकार रहकर पशु-पक्षियों के अलंकरण कार्यों को ही करते। **'कला भूषण'** मास्टर कुंदनलाल मिस्त्री अपने समय में भारत के प्रमुख चोटी के चित्रकार रहे। **'कुम्हारिन बाजार की ओर'**, **'कुम्हार हाट'** और **'ग्राम वाला'** उनके प्रमुख चित्र हैं। कुंदनलाल को स्वतंत्र चिंतन तथा पाश्चात्य कला शिक्षा की नवीन धारा के साथ ही स्थानीय स्वरूपों के अंकन की सूझबूझ का स्वाभिमान था। 1905 में उन्हें **'भारत धर्म महामंडल काशी'** के कला समारोह में **'चित्र नैपुण्य शिल्प ज्ञानादि'** पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें **'चित्रकला भूषण'** की उपाधि से भी सम्मानित किया गया था। **मास्टर कुंदन लाल मिस्त्री ने उदयपुर में महाराणा प्रताप का चित्र बनाया था जिसकी प्रतिकृति भारत के विख्यात चित्रकार राजा रवि वर्मा ने बनाई थी।**

◈ **सुरजीत कौर चोयल:** यह हिन्दुस्तान की पहली चित्रकार हैं, जिनके चित्रों को जापान की प्रतिष्ठित कला दीर्घा 'फुकोका संग्रहालय' ने अपनी कला दीर्घा के लिए उपयुक्त समझा।

◈ **घासीराम (1870-1930):**

चित्रकार घासीराम नाथद्वारा के विशेष प्रतिभा सम्पन्न चित्रकार थे जिन्होंने तत्कालीन कला के सभी मानदण्ड परिवर्तित कर चित्रकारों को नवीन प्रेरणा प्रदान की। इनका **'महाराणा प्रताप'** का चित्र 1930 ई. में प्रकाशित हुआ जिससे इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

- **औंकारलाल (1877–1929 ई.):**
  चित्रकार औंकारलाल झालावाड़ के चित्रकार नियुक्त किए गए। **'शीत की प्रातः'** व **'समाधि स्थल के समीप सैनिक'** उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। ये चित्र भारतीय पुनर्जागरण युगीन बंगाल के वाश चित्रण की पूर्व शृंखला के प्रतिनिधि चित्र हैं।
- **पन्नालाल मेवाड़ा (1860–1945 ई.):** चित्रकार पन्नालाल मेवाड़ा ने स्थानीय चित्रण में व्यावसायिकता को बढ़ावा देकर व्यक्ति चित्रण तथा 1900 ई. में मीठाराम मंदिर, उदयपुर के **'श्री रघुवरदास जी महाराज की सवारी'** लघुचित्र से विशेष ख्याति प्राप्त की। उन्होंने महाराणा फतहसिंह व अन्य राजाओं व ठाकुरों के हूबहू तैल चित्रों की शृंखला तैयार की जो राजप्रासाद संग्रहालय एवं राजकीय संग्रहालय, उदयपुर में सुरक्षित हैं। उनके पुत्र चित्रकार चतुर्भुज, देवीलाल व चन्दरलाल ने उनकी कला पद्धति को आगे बढ़ाया।
- **पन्नालाल गौड़ (1880–1950):** 20वीं सदी पूर्वार्द्ध में मेवाड़ की लघुचित्रण पद्धति के विस्तार में राज्य चित्रकार गौड़, उदयपुर राजप्रासादों में **'चितारों की ओवरी'** के मुखिया नियुक्त हुए। इन्होंने **'बापा रावल को हारीत ऋषि का आशीर्वाद'**, **'हीरो की आंगी'** नामक एकलिंग जी के चित्र तथा **'परिक्रमा'** में 22 महाराणाओं के व्यक्ति चित्र एवं शिकार के

चित्रों से विशेष ख्याति अर्जित की।

- **चित्रकार ताराचन्द व परसराम** घराने के वंशज चित्रकारों में **छगनलाल गौड़ भी 'चितारों की ओवरी'** के मुखिया एवं अंतिम राज्य चित्रकार के रूप में प्रसिद्ध हुए, जिन्होंने **'कर्नल टॉड का स्वागत' (1935 ई.)** में लघुचित्र के संयोजन एवं उसकी अनुकृतियों से विशेष ख्याति अर्जित की।
- **मठू जी (1893-1950 ई.):** ये नाथद्वारा के पेडवाल गोत्री चित्रकार थे जो टेम्परा रंगों में काल्पनिक दृश्यांकन को यथार्थता देने में सक्रिय हुए। उन्होंने महाराणा भूपालसिंह के व्यक्ति चित्रण से ख्याति अर्जित की।
- **चतुर्भुज (1895-1975 ई.):** इन्होंने उदयपुर में व्यावसायिक तैल चित्रों के निर्माण में विशेष स्थान बनाया। इनके राजप्रासाद उदयपुर में संरक्षित **'हल्दी घाटी' (1940 ई.)** तैल चित्र में उस युद्ध की घटना को बारीकी से अंकित किया गया है।
- **सोभागमल गहलोत (1907-1987):** जयपुर के चित्रकार सोभागमल गहलोत प्रदेश के प्रथम कला छात्र थे जिन्हें 1925 ई. में रियासत की छात्रवृत्ति देकर महाराजा मानसिंह ने तत्कालीन जयपुर स्कूल ऑफ आर्ट के प्राचार्य असित कुमार हलदार की सिफारिश पर बंगाल के शांति निकेतन में नियमित अध्ययन हेतु भेजा। गहलोत ने वहाँ कलागुरु नंदलाल बोस तथा सुरेनकार के सानिध्य में जलरंगीय टेम्परा पद्धति को हृदयंगम कर अपने चित्रों में राजस्थान की परम्परागत चित्रकला एवं आधुनिक चित्रकला का अभूतपूर्व सामंजस्य स्थापित किया। 'शिवाजी एवं बन्दिनी', 'बैजू व तानसेन', 'फूल बेचती महिला' आदि इनकी प्रतिनिधि कृतियाँ हैं।

इनके चित्र **'नेस्ट'** को फरवरी, 1930 में स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया था। **भारतीय कला आंदोलन में श्री गहलोत को 'नीड़ का चितेरा' नाम से संबोधित कर राष्ट्रीय कला आंदोलन में विशेष स्थान दिया गया।**

- **नन्दलाल शर्मा (1914-1947 ई.):** उदयपुर के नन्दलाल शर्मा की प्रमुख कृतियाँ 'ए व्यू ऑफ उदयपुर', 'थ्री लेक्स ऑफ उदयपुर', 'पूजा', 'आक्रोश' एवं 'प्रतीक्षा' आदि है। उन्होंने तत्कालीन राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में भारतीय पुनर्जागरणकालीन कला का सूत्रपात किया था।
- **कलाविद् मोनी सान्याल (1912-1988 ई.):** उदयपुर के चित्रकार जिन्हें 1982-83 में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा **'कलाविद्'** सम्मान से सम्मानित किया गया।
- **द्वारका प्रसाद शर्मा:** बीकानेर के द्वारका प्रसाद शर्मा की कलाकृतियों में लोक जीवन की अनुगूंज है। इन्होंने मूलर की कला तकनीक को पूर्ण आस्था के साथ आत्मसात किया। इनके चित्रों में गडरिये, किसान, रेगिस्तान के टीलों पर ऊँट पर सवार ग्रामीण, केश विन्यास करती ग्रामीण महिलाएँ, बैलगाड़ी पर बरसाती मौसम में छाता लिए सवार ग्रामवासी व घोड़े यथार्थ रूप में प्रकट होते हैं। द्वारका प्रसाद शर्मा को 1978-79 में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 'कलाविद्' सम्मान प्रदान किया गया।
- **पी. मनसाराम:** राजस्थान में आबू में जन्मे और पले पी. मनसाराम ने कोलाज, ज्यामिति, मूर्तिशिल्प, छायांकन और रचनात्मक लेखन जैसे कई क्षेत्रों में विशिष्ट काम किया।
- **कलाविद् रणजीत सिंह जे. चूड़ा वाला:** 'रघुवंश', 'ऋतुसंहार' व 'शकुंतला' पर आधारित इनकी कृतियाँ सराहनीय हैं। 1997-98 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 'फैलोशिप' प्रदान की गई।

◆ **कन्हैयालाल वर्मा (1943-2015):**

प्राचीन और अर्वाचीन कला शैलियों के समन्वय से अपनी निजी कला शैली का सृजन करने वाले कन्हैयालाल वर्मा ने राजस्थान की गौरवमयी संस्कृति को अपनी तूलिका से रंगायित किया है। वीरांगना, पद्मिनी का जौहर आदि की चित्र शृंखलाओं में नारी के वीर और त्याग भाव को कन्हैयालाल वर्मा ने रूपांकित किया है। इन्हें वर्ष 2013-14 में अकादमी द्वारा फैलोशिप प्रदान की गई।

◆ **डॉ. जगमोहन माथोड़िया:**

इंसान का सबसे वफादार मित्र माने जाने वाले **'श्वान'** पर सबसे ज्यादा चित्र बनाने के लिए डॉ. माथोड़िया का नाम 'लिम्का बुक ऑफ रिकाड्र्स' में दर्ज है। माथोड़िया ने ऐचिंग माध्यम में भी कलाकृतियों का सृजन किया है। इन्हें राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य कला पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। 2009 में बाराँ जिला प्रशासन द्वारा इन्हें 'बाराँ गौरव' सम्मान से सम्मानित किया गया।

◆ **सुरेश चन्द्र राजोरिया:**

चित्रकार सुरेश चन्द्र राजोरिया ने प्रकृति के यथार्थ को मानवीय भावों के परिप्रेक्ष्य में मोहक रंगों के मेल से उद्घाटित किया है। 'प्रकृति के चितेरे' राजोरिया का कौशल उनके जलरंगों में निर्मित चित्रों में उजागर हुआ है। उनके प्रकृति चित्र सभी माध्यमों में चित्रित हुए। जलरंग और काली स्याही उनके सर्वाधिक प्रिय माध्यम हैं। **वर्ष 1998-99 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा फैलोशिप प्रदान की गई।**

◆ **रमेश गर्ग:**

चित्रकार रमेश गर्ग की चित्र रचना में लौकिक, अलौकिक दृश्य व अदृश्य जगत के कई रूपों का सृजन है जिनसे चित्रकार एक कथाकार की तरह अनेक मानवीय भावों और संवेदनाओं से साक्षात्कार कराता है। 'एक स्त्री', 'मिस जी', 'हुक्म का बादशाह', 'पान की बेगम', 'न कोई भूत है न कोई वर्तमान है, न भविष्य', 'स्त्री-पुरुष का संघर्ष', 'युगल छवि' आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। **वर्ष 1994-95 में इन्हें राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा फैलेशिप प्रदान की गई।**

- **राम जैसवालः**
  1996-97 में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 'कलाविद्' सम्मान से सम्मानित राम जैसवाल अजमेर के हैं। जैसवाल के लिए चित्र अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम है। नीतिज्ञ, खंडित संस्कृति, स्वतंत्रता के बाद, भय, बसंत आगमन, सुबह की प्रतीक्षा, अचानक आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। राम जैसवाल कैनवास आर्टिस्ट्स ग्रुप, अजमेर के संस्थापक अध्यक्ष भी है।
- **गोपीराम (1887-1962 ई.):** जयपुर के परम्परागत तैल चित्रकार, जिन्हें महाराजा माधोसिंहजी, जयपुर ने पोथीखाना की कलाकृतियों के लेखन पर 20वीं सदी के प्रथम दशक में ही 101 रुपए एवं एक सोने की गिन्नी देकर **राज्य चित्रकार का खिताब दिया।** ये 1912 में भरतपुर के राज्य चित्रकार भी रहे। इन्हें महाराजा गंगासिंह जी ने बीकानेर भी आमंत्रित किया था।
- **चित्रकार रघुनाथ (1884-1948 ई.):** ये चित्रण के साथ ही काँच व धातु शिल्पकला कार्यों में दक्ष थे। रेखांकन में कौशल के कारण इन्होंने अपने प्रारम्भिक कला कार्यों में राजप्रासाद उदयपुर के मध्य 'सूरज गोखला' में वृहद् सूर्य की आकृति को कांच की किरणों से अभिमंडित किया। इसी काल में एकलिंग मंदिर कैलाशपुरी में रजत शिल्प के कलात्मक अलंकरण

से इन्होंने अपनी विशेष पहचान बनाई। इन्होंने **'हल्दीघाटी'** युद्ध से संबंधित अनेक तैल चित्र बनवाए।

- **असित कुमार हलदार (1890-1964 ई.):** ये बंगाल के चित्रकार थे। 20वीं सदी पूर्वार्द्ध में जयपुर के महाराजा मानसिंह जी ने बंगाल के कला पुनर्जागरण से प्रभावित होकर जयपुर कला विद्यालय में कला अध्यापन हेतु इन्हें आमंत्रित किया। इन्होंने राजस्थान में बंगाल शैली के कला पुनर्जागरण का प्रभाव उत्पन्न किया। हलदार ने अजन्ता, बाघ और जोगीमारा के गुहा चित्रों की प्रतिकृतियाँ तैयार की। इलाहाबाद संग्रहालय में सुरक्षित **'माता व पुत्र'** चित्र इनके द्विआयामी चित्रण पद्धति का आकार्षक उदाहरण है। असित कुमार हल्दार के चित्रों में देशज परिवेश बहुलता से पाया जाता है। वे महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट, जयपुर के प्रधानाचार्य रहे।
- **कुशल कुमार मुखर्जी (1890-1958 ई.):** कुशल कुमार मुखर्जी कोलकाता के थे। ये 15 जुलाई, 1929 ई. को महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स, जयपुर में आचार्य पद पर नियुक्त हुए। आचार्य मुखर्जी आधुनिक, मुक्तहस्त दृश्यांकन से प्रेरित वास्तविकतावादी कला शिक्षा के हामी थे, अत: इन्होंने पाठ्यक्रम में भी लाइफ स्टडी आदि के अध्ययन की व्यवस्था करवाई।
- **शैलेन्द्र नाथ डे (1891-1972 ई.):** शैलेन्द्र नाथ डे अवनीन्द्र नाथ टैगोर के शिष्य थे। उन्होंने भारत कला भवन, बनारस में **'काव्य मेघदूत'** पर आधारित चित्रों की श्रृंखला तैयार की। ये महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट, जयपुर में 1923 में कला अध्यापक नियुक्त किए गए। डे ने रामगोपाल विजयवर्गीय, देवकीनन्दन शर्मा, गोपाल घोष, शंभूनाथ मिश्र, व परमानन्द चोयल को प्रशिक्षण दिया।

- **ए. हरमन मूलर (1878-1969 ई.):** जर्मन चित्रकार मूलर की प्रारम्भिक कला शिक्षा ग्रीक चित्रों के अभ्यास से हुई। कला अध्ययन की तीव्र ललक के कारण अपने चित्रण कार्य के बल पर इन्होंने मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट्स में प्रवेश लिया। 1912 में **'बम्बई आर्ट सोसायटी गवर्नर पुरस्कार'** से इन्हें पुरस्कृत किया गया। महाराणा गंगासिंह जी इनके कार्य से प्रभावित होकर इन्हें 1932 में बीकानेर ले आए। तैल चित्रण की यथार्थवादी नवकला पद्धति बीकानेर व जयपुर रियासतों में मूलर के तैल चित्रों में परिलक्षित हुई। मूलर ने प्रदेश में अनेक ऐतिहासिक कथानकों पर यथार्थवादी तैल चित्रों की रचना की। जर्मन चित्रकार ए.एच. मूलर को 20वीं शताब्दी में जोधपुर दरबार में भी आमंत्रित किया गया था। जोधपुर के मेहरानगढ़ में प्रदर्शित **'वीर दुर्गादास'** इनकी सशक्त व अनूठी कलाकृति है। इनकी मृत्यु जोधपुर, राजस्थान में हुई।
- **आनन्द के. कुमारास्वामी:**
  सर्वप्रथम स्व. आनन्द कुमार स्वामी ने 1916 ई. में राजपूत चित्रकला शैली का वैज्ञानिक विभाजन अपनी पुस्तक **'राजपूत पेंटिंग्स'** में किया। इनका जन्म 1877 में कोलम्बो, ब्रिटिश सिलोन (वर्तमान श्रीलंका) में हुआ तथा मृत्यु 1947 में हुई। 'The Dance of Shiva' (1918) उनकी महत्त्वपूर्ण कृति थी। आनन्द कुमारास्वामी ने भारत और दक्षिण एशिया की कलाओं पर लगभग 500 लेख लिखे, अनेक कला फिल्में बनाई, रेखांकन किए तथा कला पुस्तकों का प्रणयन किया।
- **एर्नेस्ट बिनफील्ड हैवेल (1861-1934 ई.):**
  इनका जन्म 1861 में बर्कशायर, इंग्लैण्ड में हुआ। इंग्लैण्ड से भारत में आकर बसने वाले कलाप्रेमी हैवेल ने भारत में अपना सक्रिय जीवन एक पेशेवर अध्यापक के रूप में शुरू किया था, किन्तु कला एवं कला संबंधी

अध्ययन में अपनी विशेष रूचि के कारण वे शीघ्र ही एक कुशल कला समालोचक बनने में सफल हो गए। उन्होंने बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट के प्रशासन में सहयोग दिया। वे कोलकाता के 'आर्ट सरकारी महाविद्यालय' के प्रिंसिपल भी रहे। उन्होंने 'आधुनिक भारतीय पेंटिंग' के विकास में योगदान दिया। भारतीय कलाकार की आत्मा में पैठकर उसके सृजन की प्रभावशाली समीक्षा करने, राष्ट्रीय आदर्शवाद को समझने, समझाने तथा कला के पुनर्जागरण में सक्रिय सहयोग करने में हैवेल की भूमिका अविस्मरणीय रही। 'Indian Sculpture & Painting' उनकी प्रमुख कृति है।

◈ **कार्ल जे. खण्डालावाला (1904-1995):**

भारतीय परम्परावादी एवं समसामयिक कला का गंभीर विश्लेषण करने वाले कला समालोचक कार्ल खण्डालावाला ने कला का नया दृष्टिकोण विकसित कर अपने अनेक लेखों में भारतीय कलारूपों की परिभाषा की। वे प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम, मुम्बई के लम्बे समय तक ट्रस्टी व अध्यक्ष रहे। उन्हें 1970 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। उन्हें 1980 में ललित कला अकादमी की फैलोशिप भी दी गई।

◈ **राजा रवि वर्मा (1848-1906):**

- केरल के त्रावणकोर राजघराने से संबंधित रवि वर्मा का जन्म किलिमन्नूर गाँव (केरल) में हुआ।
- केरल के प्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा ने **'महाराणा प्रताप'** की सुंदर प्रतिकृति बनाई थी। **वे भारतीय चित्रकला के 'पितामह' कहे जाते हैं। पाश्चात्य प्रणाली पर यथार्थवादी चित्रण करने वाले भारत के प्रथम आधुनिक चित्रकार राजा रवि वर्मा ही थे।**
- भारतीय चित्रकला में प्रकृतिवाद की पश्चिमी संकल्पना के सर्वप्रथम प्रतिपादक राजा रवि वर्मा ही थे।
- 1873 ई. में आयोजित वियना कला सम्मेलन में उन्हें प्रथम पुरस्कार मिला था।
- उनके प्रसिद्ध चित्रों में चाँदनी रात में नारी, सुकेशी, श्री कृष्ण, बलराम, रावण और सीता, शांतनु और मत्स्यगंधा, शंकुतला का पत्रलेखन, इंद्रजीत की विजय, हरिश्चंद्र व दमयंती आदि शामिल हैं।

◈ **अमृता शेरगिल (1913-1941):**

- हंगरी में जन्मी अमृता शेरगिल पर प्रारम्भ में यूरोपीय शैली का बहुत प्रभाव था किन्तु बाद में ये भारतीयता की ओर उन्मुख हुई।
- उनके चित्रों में नारी समस्या का चित्रण हुआ है।
- उन्हें प्रीडा काहलो और अंग्रेजी कवि बायरन का भारतीय संस्करण कहा गया है।
- उनके प्रसिद्ध चित्रों में थ्री वूमैन, यंग वूमैन, हिल वुमैन, ब्राइड टॉयलेट और टू एलीफेंट शामिल हैं।

◈ **राय कृष्णदास (1892-1980):**

उनका जन्म वर्ष 1892 में वाराणसी में हुआ। भारतीय कला के मर्मज्ञ श्री रायकृष्णदास ने भारतीय इतिहास, धर्म, दर्शन, कला, साहित्य एवं संस्कृति का गहन अध्ययन किया था। 'भारतीय चित्रकला' तथा 'भारतीय मूर्तिकला' के अतिरिक्त उन्होंने अनेक कलापूर्ण व्याख्यात्मक लेख लिखे तथा भारतीय कला समालोचना के नए मानदण्ड स्थापित किए।

◈ **डॉ. मोतीचन्द्र:**

भारतीय कला परम्परा की ऐतिहासिक व्याख्या करने वाले सुप्रसिद्ध कला समालोचक डॉ. मोतीचन्द्र ने समय-समय पर अनेक भारतीय एवं यूरोपीय

पत्रिकाओं में भारतीय कला के गौरव को स्थापित करने वाले कई फुटकर किन्तु स्थाई महत्त्व के लेख लिखे। साथ ही 'मेवाड पेन्टिंग्ज', 'जैन मिनिएचर पेंटिंग्ज फ्रॉम वेस्टर्न इंडिया' जैसी पुस्तकें लिखकर आकर्षक भारतीय जैन चित्रशैली के प्रति विश्व का ध्यान खींचा। उनकी शोधपरक कला दृष्टि के कारण पारम्परिक भारतीय चित्रकला तथा मुगल चित्रकला के अनेक नए रहस्यों का उद्घाटन हुआ। उनकी तथ्यपरक ऐतिहासिक कला विवेचना विशिष्ट थी।

- **अवनीन्द्रनाथ ठाकुर (1871-1951):**
  'आधुनिक भारतीय चित्रकला के पितामह' अवनीन्द्र नाथ ने राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित होकर पुनरूज्जीवन शैली या पुनरूद्धार वृति शैली का सूत्रपात किया था।

  भारतीय पुनर्जागरण काल के प्रमुख अवनीन्द्रनाथ ठाकुर एक सिद्धहस्त चित्रकार होने के साथ-साथ एक सुघड़ विचारक और कला समालोचक एवं लेखक भी थे जिन्होंने भारतीय कला क्षेत्र में पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव को नकारकर श्रेष्ठ परम्परागत भारतीय मूल्यों की स्थापना की तथा अपनी कूची के साथ-साथ लेखनी के माध्यम से भी भारतीय कला के प्रचार-प्रसार में अपनी महती भूमिका निभाई। उन्होंने 'Bengal School of Art' की स्थापना की थी। 'भारत माता' व 'षडंग' उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं। उन्होंने नए विचारों वाले चित्रकारों को एकत्रित करके 'इंडियन सोसायटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट' नामक संस्था बनाई। उनके प्रसिद्ध चित्रों में बुद्ध-जन्म, बुद्ध एवं सुजाता, शाहजहां की मृत्यु और दारा के सिर का अवलोकन करते औरंगजेब का चित्र शामिल है।

- **एन.सी. मेहता:** श्री एन.सी. मेहता ने भारतीय कला शैलियों और कला परम्परा के प्रति प्रथम निर्देश देने जैसा स्तुत्य कार्य किया। '15वीं सदी की गुजरात पेंटिंग' और 'स्टडीज इन इंडियन पेंटिंग' उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।
- **डॉ. मुल्कराज आनन्द:** डॉ. मुल्कराज आनन्द एक ऐसे समालोचक रहे हैं, जिन्होंने भारतीय कला के विविध पहलुओं पर स्वयं तो बहुत कुछ लिखा ही, किन्तु अन्य कला समालोचकों को भी भारतीय कला पर शोधपरक सामग्री लिखने के लिए प्रेरित किया। इन्होंने 'मार्ग' नामक पत्रिका का सम्पादन एवं प्रकाशन किया।

- **डब्ल्यू. जी. आर्चर:** डब्ल्यू.जी. आर्चर अंग्रेज थे जिनका ध्यान भारतीय कला क्षेत्र की ओर विशेष रूप से केन्द्रित हुआ। भारतीय कला पर लिखी हुई उनकी अधिकांश पुस्तकें लंदन में ही प्रकाशित हुई।
- **डॉ. एम.एस. रन्धावा:** कांगड़ा और बसोहली की लघु चित्र परम्परा, उसके गौरव और गरिमा को प्रतिष्ठित करने वाले समालोचक जिन्होंने एक ओर तो भारत की लघुचित्र परम्परा के विषय में लेख लिखे तो दूसरी ओर कांगड़ा वैली पेटिंग्ज, भागवत पुराण पेंटिंग्ज और बसोहली पेंटिंग्ज आदि पुस्तकों का प्रणयन करके कला विषयक अपनी विश्लेषण एवं विवेचन शक्ति का परिचय दिया।
- **मकबूल फिदा हुसैन (1915-2011 ई.):**
महाराष्ट्र के पंढरपुर में जन्मे भारत के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार, फिल्म निर्माता व राजनीतिज्ञ जिन्हें **1966 में पद्मश्री, 1973 में पद्मभूषण व 1991 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।** इन्हें राजा रवि वर्मा पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। वे बोल्ड एवं जीवंत रंगीन पेंटिंग बनाने के लिए प्रसिद्ध थे। वे क्यूबिस्ट स्टाइल में चित्रकारी करते थे। 'गज गामिनी', 'मीनाक्षी-ए टेल ऑफ थ्री सिटीज,' थ्रू द आईज

ऑफ ए पेंटर (1967) इनकी प्रमुख फिल्में हैं। वे राज्यसभा सदस्य भी रहे। 2011 में उनका निधन हो गया। 1952 में उनके चित्रों की एकल प्रदर्शनी ज्यूरिख में आयोजित हुई थी। वे भारत के सर्वश्रेष्ठ पेंटर थे।

- **ओ.सी. गांगुली:** भारतीय कला के संबंध में अंग्रेजी में लिखने वाले कला समालोचक जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक परम्परा पर शोध करते हुए **'इंडिया आर्ट एण्ड हेरिटेज'** नामक पुस्तक प्रकाशित करवाई। तत्कालीन राजपूताना की विभिन्न लघुचित्र शैलियों के चुनिन्दा चित्रों पर उन्होंने **'मास्टर पीसेज ऑफ राजपूत पेंटिंग'** पुस्तक लिखी जो सन् 1926 में प्रकाशित हुई। इन्होंने भारतीय राग रागनियों पर भी पुस्तकें लिखी।
- **वाचस्पति गैरोला:** भारतीय कला, विशेषत: चित्रकला का मौलिक ऐतिहासिक अध्ययन एवं निरूपण करने वाले कला समालोचक गैरोला ने अपने विविध कला लेखों के माध्यम से ऐसे समय में कला के प्रति लोगों को जागरूक किया जब अंग्रेजियत के प्रभाव से आक्रांत होकर भारतीय समाज अपने सांस्कृतिक गौरव को लगभग भुला बैठा था। **'भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त परिचय'** तथा **'भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास'** आदि पुस्तकें लिखकर इन्होंने भारत में प्रचलित प्राय: सभी कला शैलियों तथा प्रागैतिहासिक, बौद्ध, जैन, राजपूत, मुगल, आधुनिक एवं लोककला आदि पर विचारपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया।
- **मनोहर कौल:** इन्होंने **'ट्रेण्ड्स इन इंडियन पेंटिंग्ज'** जैसा महत्त्वपूर्ण ग्रंथ

लिखकर भारतीय कला समालोचना के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किया। अजंता, जैनकला, मुगलकला, पहाड़ी तथा राजस्थानी लघुचित्र शैलियों के साथ-साथ श्री कौल ने आधुनिक कला व कलाकारों के विषय में विस्तृत रूप से लिखा।

- **जोधपुर के आधुनिक काल के चित्रकार:** बत्तूलाल, फौजलाल, पी.डी. जोशी, धर्मसिंह, मोहनलाल शर्मा, सैयद मेहरअली अब्बासी, प्रफुल्ल सिन्हा, चन्द्रमोहन मिश्रा, मालाराम शर्मा, इशाक मोहम्मद।
- **बीकानेर के आधुनिक चित्रकार:** मोहनसिंह राठौड़, कान्तिचन्द्र, के.राज, भोजराज, सुन्दरलाल, हनुमान सुथार, रंजन गौतम, कलाश्री, आशाराम गोस्वामी, प्रेमचन्द्र गोस्वामी, नारायण आचार्य, राधावल्लभ, गौतम सन्नू, जमालुद्दीन उस्ता, महावीर स्वामी।
- **अजमेर के आधुनिक चित्रकार:** बी.सी. गुई, राम जैसवाल, र.वि. साखलकर, प्रकाश, अशोक हाजरा व दीपिका हजारा, हरीश वर्मा, चित्रा भटनागर।
- **जयपुर के राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त चित्रकार:** घनश्याम निम्बार्क, मोहन सोनी, शाकिर अली, संतोष, रमेश, सुरेश, गोपाल, अन्नाराम, शैतान सिंह, सावंत सिंह, इरशाद, उस्मान, रामू रामदेव, गोविन्द राम देव, दरबारी लाल, राजाबाबू, शिवशंकर।